Godda college, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	TC-201	Group dynamics - Process and importance on learning	Pdf

P.Kumar
28/04/2020

T.C-201
Unit-6

• Group dynamics - Process and its importance on Learning
(समूह गत्यात्मकता - प्रक्रिया एवं अधिगम में विशेषताएँ)

समूह गत्यात्मकता की अवधारणा एवं इसकी परिभाषा के संबंध में समाजशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के विचारों में काफी भिन्नता देखने को मिलती है। अतः समूह गत्यात्मकता को एक सर्वमान्य परिभाषा में बाँधना एक कठिन कार्य है। तथापि अध्ययन के दृष्टिकोण से समूह गत्यात्मकता की सभी प्रचलित अवधारणाओं के विचार के उपरांत समूह गत्यात्मकता को जानने में तीन कारण अति महत्वपूर्ण हैं:-

(i) समूह अपने सदस्यों पर व्यापक प्रभाव डालता है। मनोवृति, मूल्य एवं व्यवहार व्यापक रूप से समूह के दूसरे सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया से प्रभावित होते हैं। हमारा व्यवहार किस प्रकार का हो और हम क्या हैं इसे बताने के लिए हम मुख्य रूप से समूह पर ही निर्भर हैं।

(ii) एक समूह का दूसरे समूह पर एवं संगठन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी भी संगठन में ज्यादातर कार्य समूह के द्वारा ही होते हैं और संगठन की सफलता बहुत हद तक समूह की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। व्यक्तियों के समूह की संयुक्त क्रिया कुछ व्यक्तियों की क्रिया से बहुत ऊपर होती है।

Scanned with CamScanner

(iii) समूह में घटित कुछ खास (Unique) व्यवहारों की व्याख्या समूह प्रक्रिया के माध्यम से ही की जा सकती है। समूह के सदस्य विशिष्टकृत कार्य करते रहते हैं इसकी व्याख्या समूह में व्याप्त भूमिकाएं समूह की भूमिका की जानकारी लेकर ही की जा सकती है। समूह गत्यात्मकता की जानकारी इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इससे मानवीय अन्तःक्रिया एवं समस्याओं के निदान की जानकारी मिलती है।

समूह गत्यात्मकता से संबंधित एक विचार यह है कि समूह गत्यात्मकता वास्तव में समूह-संगठन तथा संचालन का स्वरूप है। इन विचार के समर्थकों ने प्रजातांत्रिक नेतृत्व (democratic leadership), सदस्यता-सहभागिता (member participation) तथा सामूहिक सहयोग (group co-operation) पर विशेष रूप से बल दिया है।

दूसरा विचार यह है कि समूह-गत्यात्मकता का तात्पर्य भूमिका-निर्वाह (role-playing) समूह चिकित्सा (group therapy) संवेदनशीलता तथा अन्य सम्बद्ध प्रविधियों से है।

लेविन (Lewin 1944; 1945) ने समूह गत्यात्मकता शब्द का उपयोग सबसे पहले किया। उनके अनुसार समूह गत्यात्मकता इस बात का अध्ययन करता है कि किस प्रकार के समूह में परिवर्तन की संभावना अधिक होती है तथा किस दिशा में परिवर्तन की संभावना होती है।

द्विवेदी (Dwivedi, 1979) के अनुसार - "समूह गत्यात्मकता का तात्पर्य समूहों के अन्दर होने वाले परिवर्तन से है, तथा इसका संबंध सामाजिक परिस्थितियों में समूह-सदस्यों के बीच पारस्परिक प्रक्रिया तथा शक्तियों से है

Scanned with CamScanner

समूह गत्यात्मकता प्रक्रिया (Group dynamics process) →

अधिकांश समाजशास्त्रियों की राय में समूह विकास एक गतिशील प्रक्रिया है। सामान्यत: सभी समूहों में परिवर्तन होते रहते हैं। वे कभी पूर्ण स्थायित्व तक नहीं पहुँचते। लेकिन इसके बावजूद समूहों के उद्गम या विकास के विभिन्न चरणों की पहचान की जा सकती है।

Forming रूपीकरण	Storming विप्लवीकरण	Norming मानकीकरण	Performing निष्पादिकरण	Adjourning स्थगनीकरण

⇒ रूपीकरण (Forming) - समूह विकास का प्रथम चरण है। शुरू-शुरू में समूह का उद्देश्य, इसकी संरचना और नेतृत्व को लेकर बड़ी अनिश्चितता बनी रहती है। सदस्यों का ध्यान इधर उधर रहता है। जब सदस्यों द्वारा स्वयं को समूह का हिस्सा मानना शुरू कर दिया जाता है तब यह चरण पूरा हो जाता है।

⇒ विप्लवीकरण (Storming) - समूह विकास का दूसरा चरण है। इस चरण पर समूह के भीतर मतभेद व संघर्ष की स्थिति देखी जा सकती है। यद्यपि सदस्यों द्वारा समूह के अस्तित्व को स्वीकारा जाता है, लेकिन वे समूह द्वारा अपने ऊपर लगाए जाने वाले नियन्त्रण का प्रतिरोध करते हैं।

फिर भी इस बात को लेकर संघर्ष बढ़ता है कि समूह पर नियन्त्रण किसका रहेगा। जब यह चरण पूरा हो जाता है तब समूह के भीतरी नेतृत्व की सोपानिकता (Hierarchy of leadership within the group) सुस्पष्ट होने लगती है।

⇒ मानकीकरण (Norming) - समूह विकास का तीसरा चरण है। इसमें समूह के सदस्यों के बीच सम्बन्ध विकसित होने लगते हैं और समूह की संगतता या संसक्तिशीलता (Cohesiveness) प्रदर्शित होती है। इस कारण सदस्यों में मैं के स्थान पर हम की भावना का विकास होता है। वे स्वयं को समूह के रूप में पहचाने जाने में गर्व महसूस करते हैं। समूह की संरचना सुव्यवस्थित व सुदृढ़ होने तथा सदस्यों के प्रत्याशित व्यवहार पर आम सहमति होने के साथ यह चरण पूरा हो जाता है।

⇒ निष्पादिकरण (Performing) - समूह विकास का चौथा चरण है। इस चरण पर समूह पूरी तरह से सक्रिय, क्रियाशील व स्वीकार्य हो जाता है समूह का प्रत्येक सदस्य कार्यों को हाथों-हाथ पूरा करने के लिए आवश्यक बातों को जानने व उसे समझने के लिए तत्पर रहता है। समूह विकास की दृष्टि से, स्थायी कार्य-समूहों के लिए उपर्युक्त निष्पादिकरण का चरण ही अन्तिम चरण है।

Scanned with CamScanner

⇒ स्थगनीकरण (Adjourning) - अस्थाई समितियों, कार्यदलों और अन्य इसी तरह के समूहों के लिए जो कुछ निश्चित कार्य के लिए बनाये जाते हैं उनके लिए अंतिम चरण है। इस चरण में समूह द्वारा अपना कार्य पूरा कर लेने के बाद समूह को भंग करने की बारी आती है। इस चरण में समूह की प्राथमिकता कार्य को जल्द से जल्द निपटाने के लिए होता है। सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग हो सकती है। कुछ सदस्य समूह की उपलब्धि पर आनंदित होते हैं। कुछ सदस्य यह सोचकर उदास होते हैं कि समूह में गुजारे गए वे जीवन्त समय आगे नहीं होंगे।

समूह विकास की प्रक्रिया एक गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए यह जरूरी नहीं है कि उनका विकास बिलकुल इसी तरह से क्रमिक चरण में ही हो। समूह अपने पूर्ववर्ती चरणों की ओर भी लौट सकता है।

Importance on learning (अधिगम में महत्व)

छात्र समूहों में एक दूसरे से सीख सकते हैं, लेकिन समूहों में सीखने वाले छात्र स्वचालित रूप से नहीं होता है जब तक कि समूह गतिविधि ध्यान से न हो। फ्री शेयरिंग, लीडरशिप फॉलिंग

~~खराब~~ खराब समय प्रबन्ध, और संघर्ष, जैसे समूह गत्यात्मकता अक्सर सीखने के परिणामों से समझौता करते है।

⇒ समूह का प्रभाव सदस्यों के व्यवहार पर आवश्यक रूप से पड़ता है। जो समूह जितना अधिक सशक्त होता है सदस्यों पर उसका प्रभाव उतना ही अधिक पड़ता है -

⇒ समूह गत्यात्मकता का ज्ञान होने से शिक्षक छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत बनाने मे सफल हो पाते है। छात्रों के समूह गत्यात्मकता का ज्ञान होने से शिक्षक को उन विघटनकारी बलों (disruptive forces) का पता चल जाता है जिससे छात्रों के आपसी संघर्ष, मानसिक तनाव आदि बने रहते हैं जिसका मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है शिक्षक छात्रों के समूह संघर्ष को हटाकर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव डालने मे सफल हो पाते है।

⇒ समूह गत्यात्मकता के ज्ञान के आधार पर शिक्षक कक्षा मे उचित पाठ्यक्रम तैयार कर पाते है तथा उचित अध्ययन विधियों का चुनाव कर पाते है।

⇒ समूह गत्यात्मकता का ज्ञान से शिक्षक छात्रों की सामाजिक-बौद्धिक एवं शैक्षिक विभिन्नताओं को ज्ञात अवगत कर सकते है।

⇒ बालकों में संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक समस्याओं के सुधार के लिए भी यह आवश्यक है कि शिक्षक को समूह गत्यात्मकता का ज्ञान हो। इससे छात्रों की मूल कारणों का अंदाज शिक्षक को हो जाता है और तब वे उसके निराकरण के लिए उचित कार्यक्रम तैयार करने में सफल हो पाते हैं।

⇒ समूह गत्यात्मकता का ज्ञान होने से शिक्षक छात्रों में सहयोगिता (cooperativeness), आत्म-सम्मान (self-respect), परोपकार (altruism) आदि का शीलगुण विकसित करने में अधिक मदद मिलती है, क्योंकि समूह गत्यात्मकता का ज्ञान होने से बालकों की मानसिक प्रवृत्तियों के बारे में अंदाज हो जाता है।

⇒ हेविंगहर्स्ट (Havinghurst, 1972) ने इस क्षेत्र में किए गए अध्ययनों के आलोक में यह बताया कि समूह गत्यात्मकता का महत्व शिक्षा में इसलिए भी अधिक है क्योंकि इसके आधार पर अलाभान्वित बालकों (disadvantaged children) में व्याप्त असुरक्षा के भाव, हीनता की भावना आदि को कम करके उनके शैक्षिक स्तर को उन्नत बनाया जा सकता है।

अतः समूह गत्यात्मकता का महत्व कक्षा में दिए जाने वाले शिक्षा के लिए काफी अधिक है। शिक्षक अपना कर्तव्य ठीक ढंग से निभा पाते हैं और छात्रों को सही दिशा निर्देश प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner